✓ किशोरावस्था में मानसिक विकास

जरशील्ड ने अपनी पुस्तक 'किशोर मनोविज्ञान adult psychology' में किशोरावस्था के मानसिक विकास की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है-
Characteristics of adolescence in hindi

1. सामान्यीकरण की वर्धित योग्यता

बालकों में बौद्धिक विकास मूर्त वस्तुओं के चिंतन तक सीमित होता है। जैसे जैसे वह किशोरावस्था को प्राप्त होता है वह प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रवृत्ति संकल्पनाओं के रूप में सोचने के प्रति हो जाती है। इस प्रकार किशोरों में सामान्यीकरण की योग्यता बढ़ती जाती है।

• अमूर्त चिंतन की वर्धित योग्यता योग्यता

किशोरावस्थामें न केवल सामान्यीकृत चिंतन होता है बल्कि उसमें अमूर्त चिंतन की योग्यता भी आ जाती है। औसत बालक लगभग 14 वर्ष की उम्र तक बीजगणित के ढंग से अमूर्त चिंतन के योग्य हो जाता है। यह अमूर्त चिंतन की योग्यता गुण और परिणाम दोनों के ही संबंध में प्रकट होती है। **अमूर्त वस्तुओं के व्यवहार की योग्यता का एक अंग है– प्रतीकों को समझना। व्यंग्य चित्रों के अर्थ ग्रहण की योग्यता इसका उदाहरण हो सकता है।**

• समय संबंप्रत्यय कि समझ

बाल्यावस्था तक बालक में भविष्य क्या है? उसके लिए क्या योजना बनाई जाए-जैसी समझ विकसित नहीं होती। वह केवल अतीत की बात समझता है। किशोरावस्था में भविष्य के बारे में समझ विकसित हो जाती है।

फ्रीडमैन (fridman) ने इसके लिए अध्ययन किए और निष्कर्ष निकाला कि किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते किशोर पारिभाषिक शब्दों तारीखों और काल क्रम को समझने में अधिक सफल रहे।

जैसे– ईसा के जन्म से पहले या बाद के समय की गणना कैसे की जाती है-जैसी गणना सही कर सकें।

• निर्णय करने की योग्यता

किशोरों में प्राय: निर्णय लेने की योग्यता का विकास हो जाता है। वह आत्म निर्णय लेकर परिस्थिति को समझ जाता है और तर्कसंगत व्यवहार करता है। भविष्य में क्या बनना है इसका निर्णय वह ले सकता है। उसमें आत्मविश्वास बढ़ जाता है और वह सही चुनाव कर लेता है।

• तात्कालिक व्यक्तिगत स्वार्थों से रहित विचारों के व्यवहार की योग्यता

प्राय: छोटे बालकों का संबंध उन चीजों से होता है जिनसे उसका सीधा और व्यक्तिगत लगाव होता है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वह अधिकाधिक सोचने-विचारने में समर्थ हो जाता है। वह न केवल अपने और अपने परिवार की बल्कि विस्तृत विश्व के लोगों के विषय में भी विचार करता है। किशोर

में अपने निकटस्थ कार्य क्षेत्र से कहीं अधिक विस्तृत संसार की घटनाओं के बारे में सोचने विचारने की योग्यता आ जाती है।

• अन्य व्यक्तियों के साथ बौद्धिक संप्रेषण की योग्यता

किशोरावस्था में तार्किक विवेचन की एवं किसी विषय वस्तु पर लगातार विचार विमर्श करते रहने से भी क्षमता विकसित हो जाती है। वे किसी प्रवक्ता द्वारा रचित प्रकरण पर भी अपनी टिप्पणी दे सकते हैं। उनमें परस्पर वाद विवाद एवं विचार विमर्श की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

• वृहत्तर विश्व की स्थितियों एवं पात्रों से तादात्म्य

किशोरावस्था में संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से एक परिवर्तन यह आता है कि निजी वातावरण से बाहर के लोगों और स्थितियों से तादात्म्य का अनुभव करने में भी अधिक समर्थ हो जाते हैं। अपने नायकों अथवा आदर्श व्यक्तियों का वर्णन करने में अपने सर्वाधिक प्रशंसा पात्र का नाम बताने को यदि उनसे कहा जाए तो उनकी यह योग्यता स्पष्ट प्रकट हो जाती है।

• नैतिक प्रत्यय एवं मूल्यों का अवबोध–

किशोरावस्था की ओर अग्रसर होने पर किशोर में नैतिक विकास की दो प्रमुख प्रवृतियां दिखाई देती हैं (१) उसकी नैतिक संकल्पनाएं अधिक व्यापक हो जाती है और (२) उसके नैतिक आदर्श एवं संकोच उसके आंतरिक अंग बन जाते हैं।

सामान्यता वह सच और इमानदारी बरतता है। यदि कभी झूठ बोल देता है तो उसे बेचैनी का अनुभव होता है अर्थात सही और गलत, अच्छे और बुरे, कर्तव्य और अकर्तव्य की भावना के संबंध में वह निर्णायक स्वयं ही बन जाता है।

• अपने को तथा दूसरों को समझने की अभिरुचि में वृद्धि–

संज्ञानात्मक विकास की एक और महत्वपूर्ण विशेषता किशोर में यह भी है कि वह स्वयं को और दूसरों को वस्तुनिष्ठ होकर देखने में रुचि लेते हैं। जैसे -किशोर की इच्छा यह होती है कि वह अपनी योग्यता से अच्छे अंक प्राप्त करें। वह लक्ष्य प्राप्ति के साधन के रूप में अपनी योग्यता की चिंता करता है। किसी अच्छे पद पर रहने की योग्यता उसमें विकसित हो इस बात के लिए वह ज्यादा अपेक्षा करेगा।

किशोरों में संज्ञानात्मक विकास (cognitive dovelpment) को उनमें वर्धित चिंतन, तर्क एवं निर्णय की क्षमता उनकी कल्पना शक्ति, खेल संबंधी रुचियां एवं भाषा पर अधिकार आदि क्षेत्रों में देखा जा सकता है। **जीन पियाजे (piaget) ने भी उनमें इस अवस्था में अमूर्त चिंतन, तर्क, निर्णय आदि की योग्यता की वृद्धि को महत्वपूर्ण बताया है।**